साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

एक किताब

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

है जिनदगी एक किताब
यह जान लिजीयें जनाब
जिनदगी हमें जीना है
हर दिन एक पन्ना है
हर रोज़ कुछ लिखता है
कुच सिखता है
जो कुछ नही करता
समय यू ही गँवाता
रह जाता उसका हर पन्ना सादा
मिलता नही किसी को कम या ज्यादा
जो समय को न पहचानता
जिंनदगी किताब नही रद्दी बनजाता
हर प्रश्न का दीजिए जवाब
हर काम का कीजिए हिसाब
वर्ना बेकार हो जायेगी यह जिन्दगी का किताब
यह जिन्दगी का किताब
जो हुआ है हमे नसीब
न कीजिएगा इसका उपयोग अब
तो जाइएगा गरीब
यह जान लीजिए सभी
समय नही बीता है अभी
अगर नही कीजिएगा इसका भी
तो नही आएगा यह समय कभी
यू ही जीते-जीते
जिन्दगी बीत जाएगी
यू ही सिसकाते -सिसकाते

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

किताब छीज जाएगी
नही बचेगा कुछ
मिट जाएगा सब कुछ
कीजिए कुछ काम अन्मोल
बढ़ जाएगा इसका मोल
और इस जिन्दगी के किताब
बढ़ जाएगा किमत
सब पहचानेगे अपनी ज़रूरत
वर्ना यू ही घीलते-घीसते
समय की रेत पर चलते-चलते
न रहेगा कोई नामो निशान
न कोई पहचान
इसलिए हर रोज पढ़िए
ढिक से समय के जिन्दगी का किताब
इसी तरह न छोड़िए
वर्ना हवा की झोके हर रोज
उड़ती जाएगी किताब का पन्ना
और एक दिन यू ही
सारे पन्ने पलट जाएगें
दोबारो पड़ने का मौका
किसी को नही मिलता
कहते है यमराज के का का
फट जाएगी जिन्दगी का किताब
क्या आप नही समझें जनाब